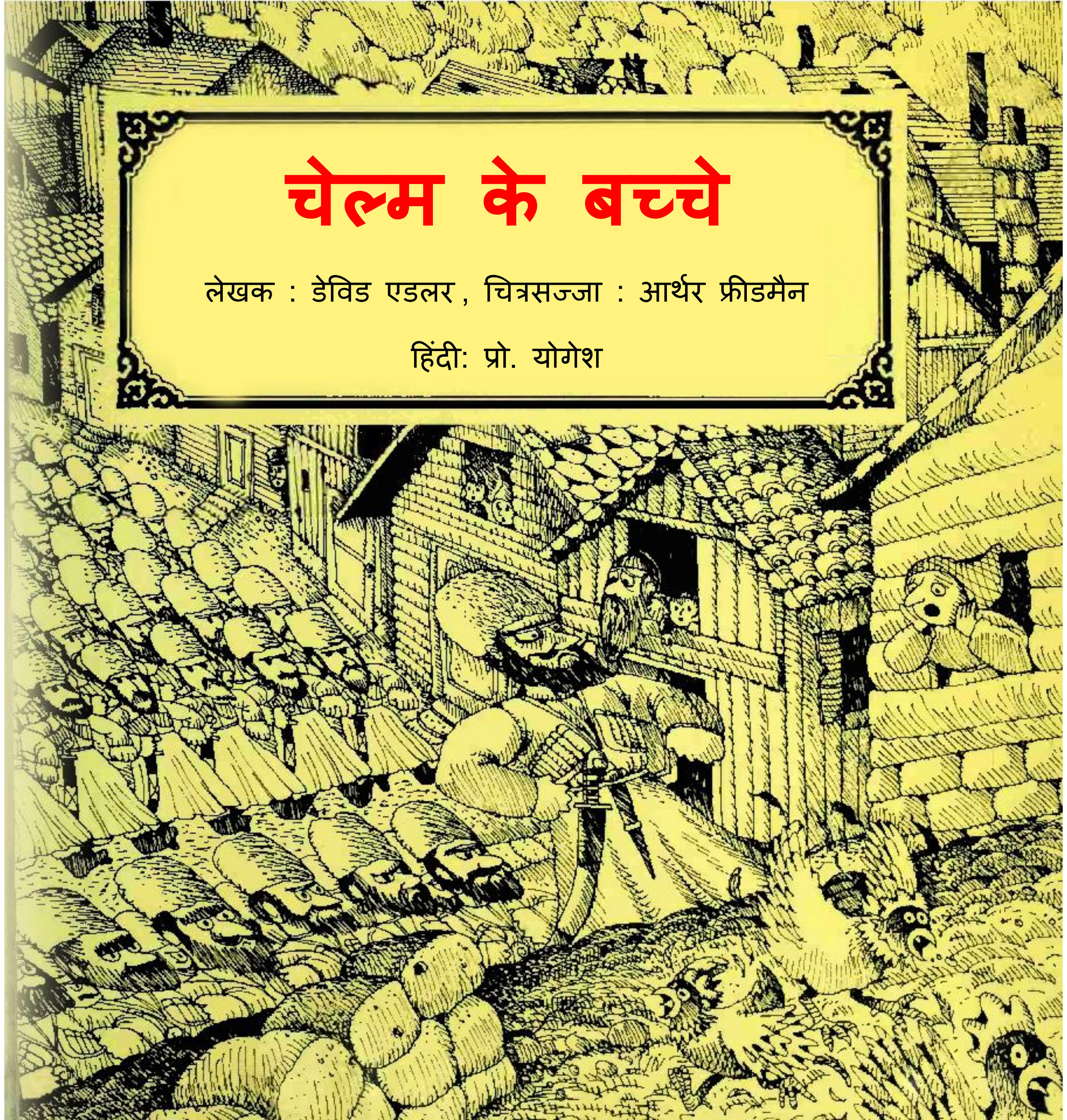
चेल्म के बच्चे

लेखक : डेविड एडलर, चित्रसज्जा : आर्थर फ्रीडमैन

हिंदी: प्रो. योगेश



चेल्म के बच्चे

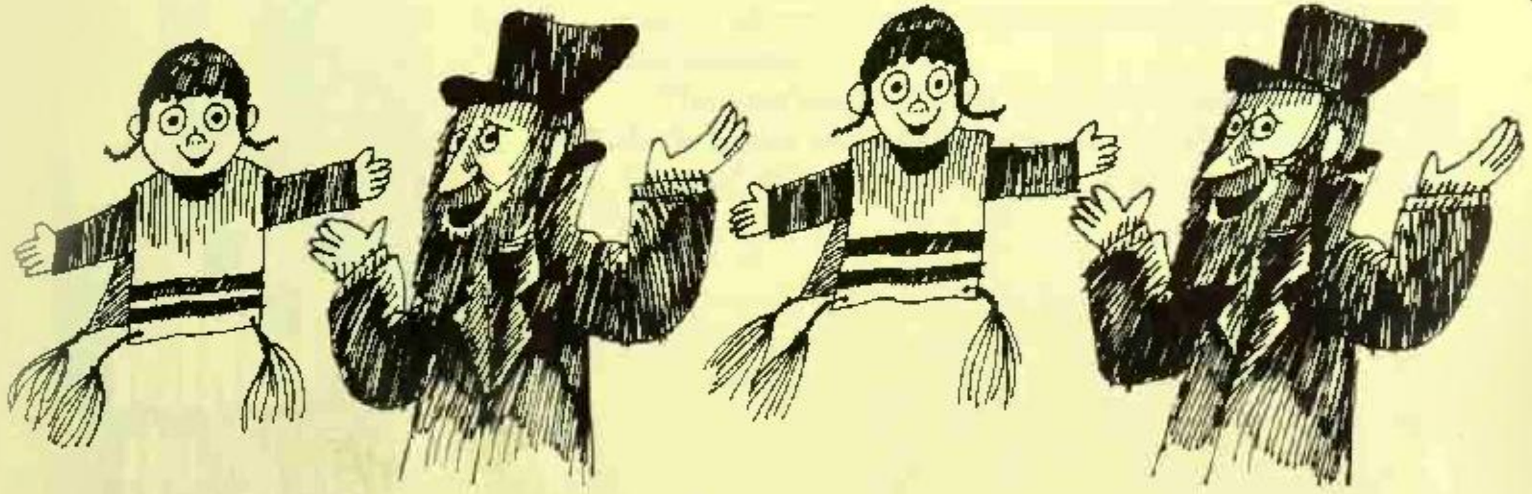
लेखक : डेविड एडलर

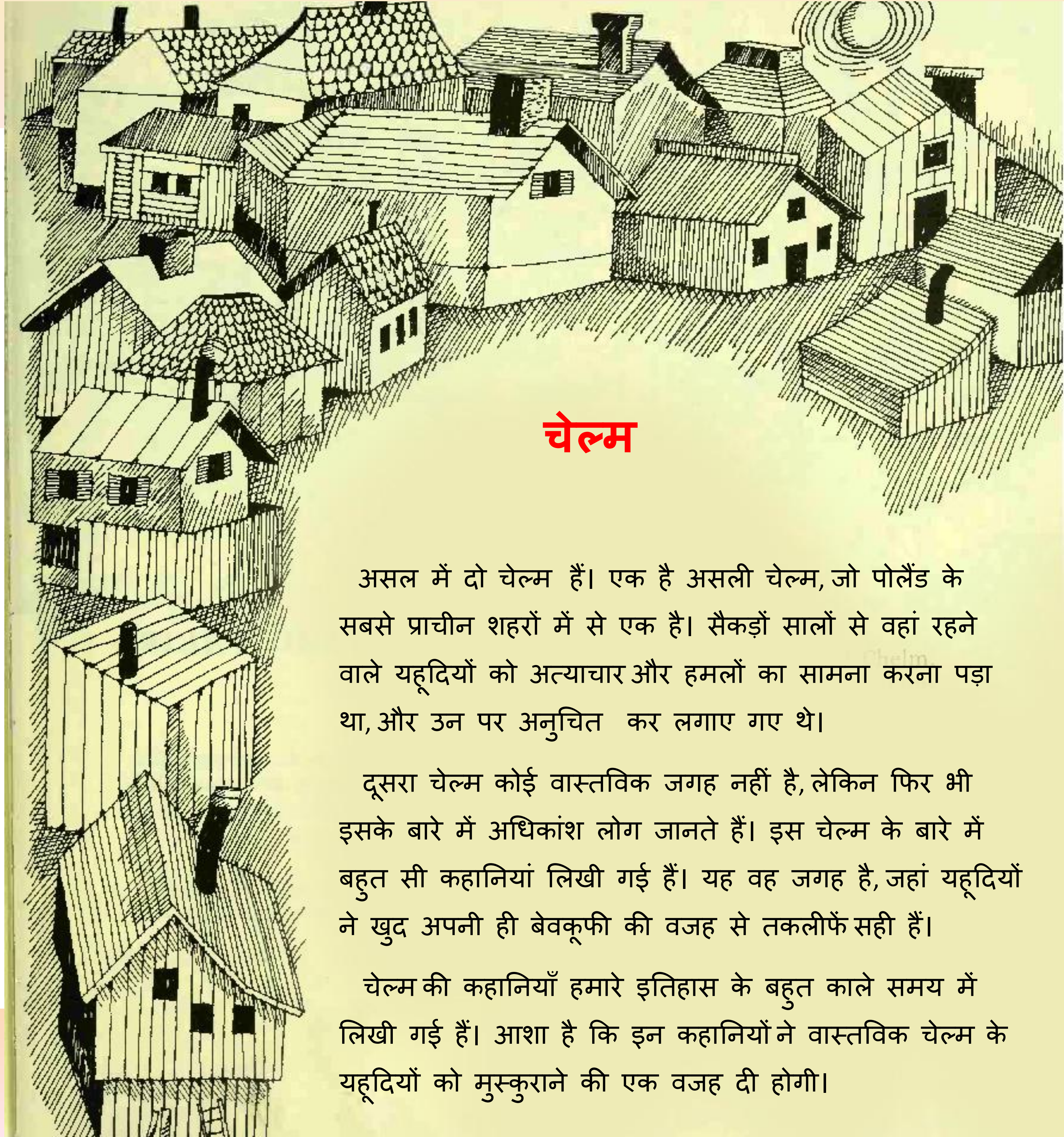
चित्रसज्जा : आर्थर फ्रीडमैन

हिंदी: प्रो. योगेश

अनुक्रमाणिका







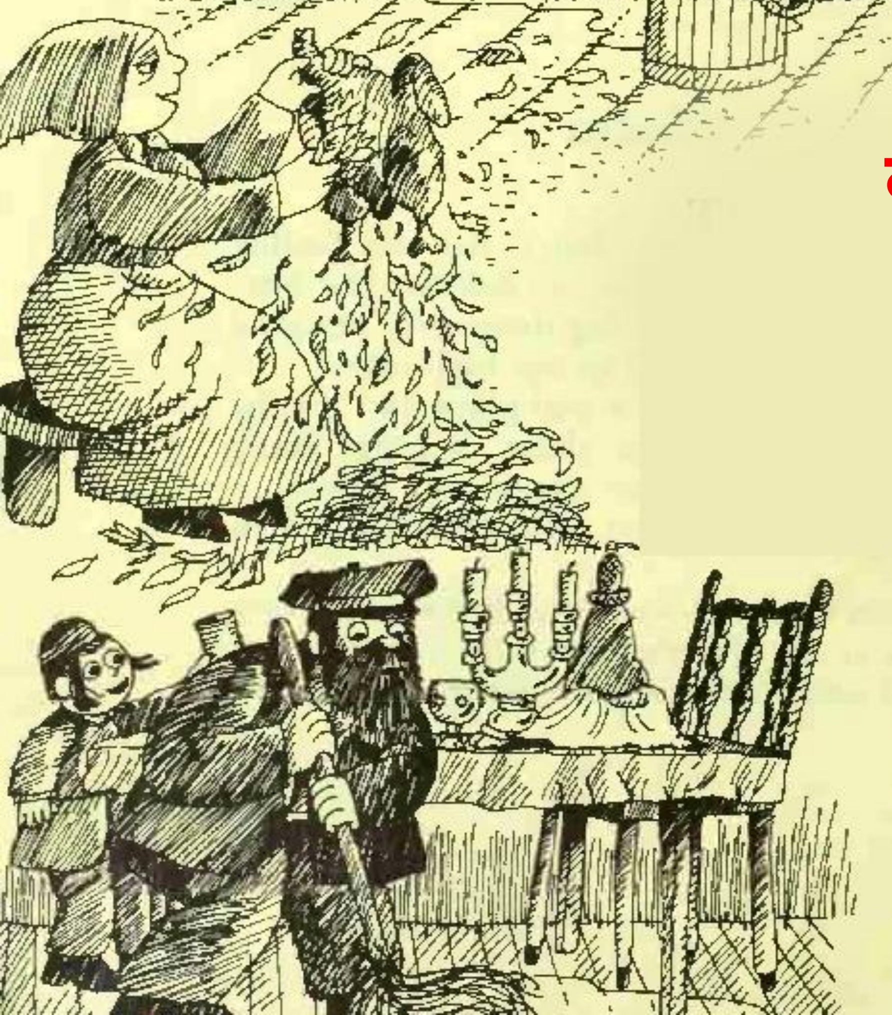
चेल्म

असल में दो चेल्म हैं। एक है असली चेल्म, जो पोलैंड के सबसे प्राचीन शहरों में से एक है। सैकड़ों सालों से वहां रहने वाले यहूदियों को अत्याचार और हमलों का सामना करना पड़ा था, और उन पर अनुचित कर लगाए गए थे।

दूसरा चेल्म कोई वास्तविक जगह नहीं है, लेकिन फिर भी इसके बारे में अधिकांश लोग जानते हैं। इस चेल्म के बारे में बहुत सी कहानियां लिखी गई हैं। यह वह जगह है, जहां यहूदियों ने खुद अपनी ही बेवकूफी की वजह से तकलीफें सही हैं।

चेल्म की कहानियाँ हमारे इतिहास के बहुत काले समय में लिखी गई हैं। आशा है कि इन कहानियों ने वास्तविक चेल्म के यहूदियों को मुस्कुराने की एक वजह दी होगी।





बच्चे और उनका स्नान

चेल्म में सबथ, यानि शनिवार, एक आराम करने का दिन होता था। लेकिन शुक्रवार नहीं। शुक्रवार को आदमी, औरतें और बच्चे, सब सबथ की तैयारी करने की भाग-दौड़ में लगे होते थे। वे खाना बनाने और सफाई के कामों में व्यस्त होते थे।



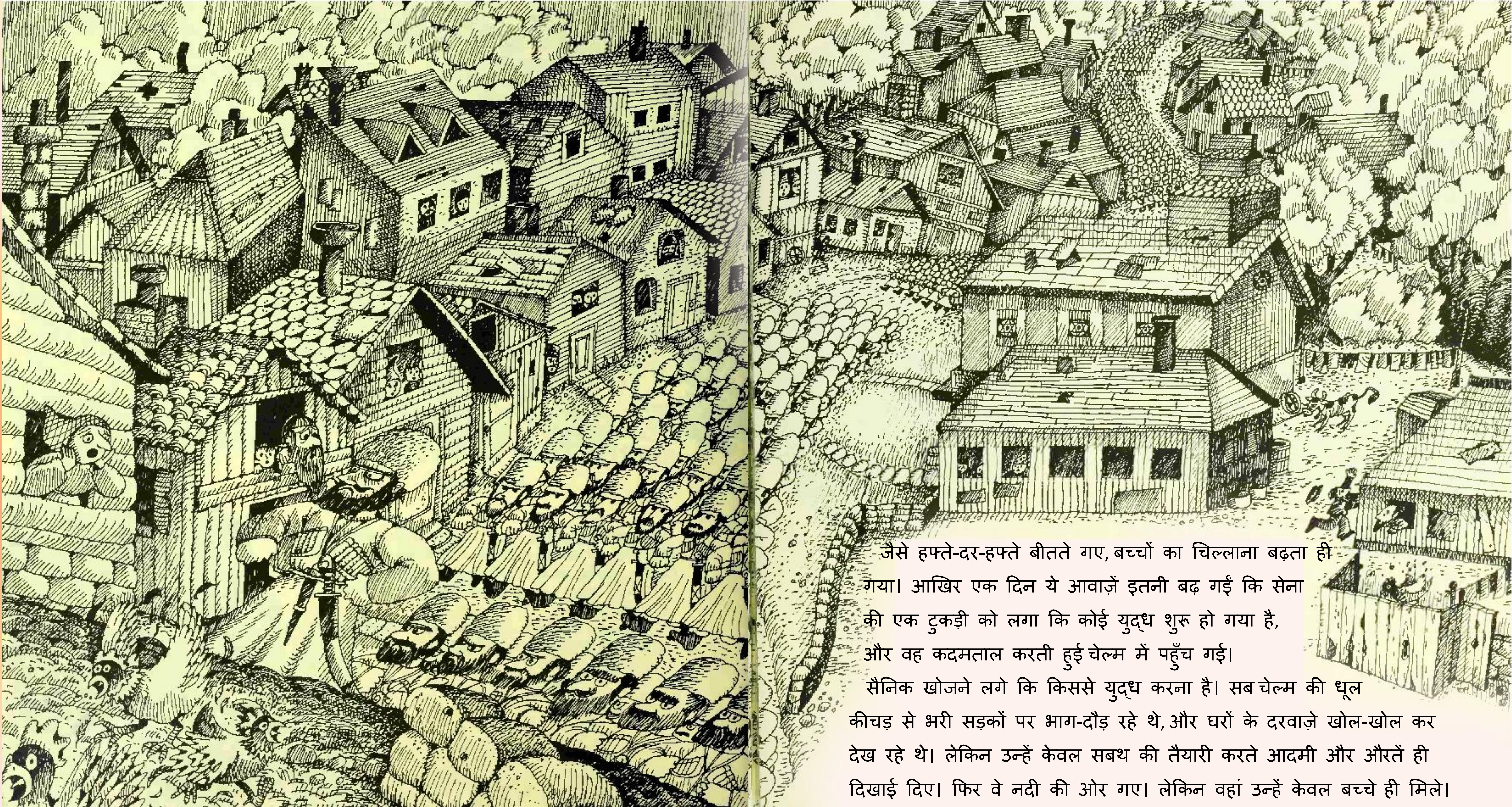


बच्चों के लिए शुक्रवार का दिन नहाने का दिन भी था। चेल्म में कोई बड़े टब या ड्रम तो थे नहीं, इसलिए बच्चे नदी में ही नहाते थे।

"मुझे यह पानी बिलकुल अच्छा नहीं लगता," बच्चे चिल्लाते, "यह बहुत ठंडा है।"

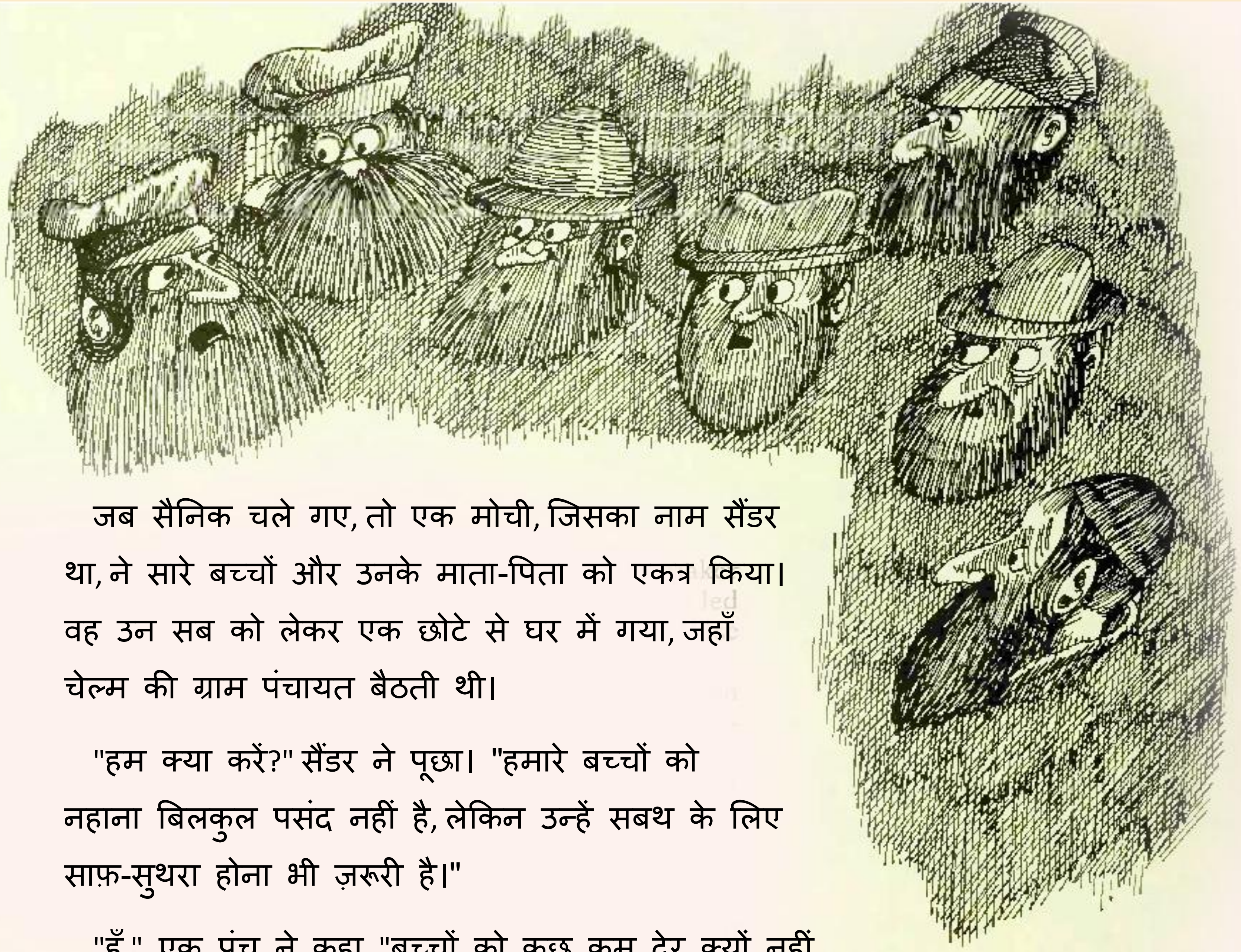
"माँ, माँ, एक मेंढक मेरे पैर के नीचे आ गया।"

"अरे पानी बरसने लगा, मैं भीग रहा हूँ।"



जैसे हफ्ते-दर-हफ्ते बीतते गए, बच्चों का चिल्लाना बढ़ता ही गया। आखिर एक दिन ये आवाज़ें इतनी बढ़ गईं कि सेना की एक टुकड़ी को लगा कि कोई युद्ध शुरू हो गया है, और वह कदमताल करती हुई चेल्म में पहुँच गई।

सैनिक खोजने लगे कि किससे युद्ध करना है। सब चेल्म की धूल कीचड़ से भरी सड़कों पर भाग-दौड़ रहे थे, और घरों के दरवाज़े खोल-खोल कर देख रहे थे। लेकिन उन्हें केवल सबथ की तैयारी करते आदमी और औरतें ही दिखाई दिए। फिर वे नदी की ओर गए। लेकिन वहां उन्हें केवल बच्चे ही मिले।



जब सैनिक चले गए, तो एक मोची, जिसका नाम सैंडर था, ने सारे बच्चों और उनके माता-पिता को एकत्र किया। वह उन सब को लेकर एक छोटे से घर में गया, जहाँ चेल्म की ग्राम पंचायत बैठती थी।

"हम क्या करें?" सैंडर ने पूछा। "हमारे बच्चों को नहाना बिलकुल पसंद नहीं है, लेकिन उन्हें सबथ के लिए साफ़-सुथरा होना भी ज़रूरी है।"

"हूँ,", एक पंच ने कहा, "बच्चों को कुछ कम देर क्यों नहीं नहलाते?"

"नहीं," दूसरे पंच ने कहा, "उन्हें बिना पानी के नहाने दो। नदी किनारे तक चले जाएँ, लेकिन पानी में न उतरें। फिर न उन्हें ठण्ड लगेगी, और न ही मेंढक पाँव के नीचे आएगा।"

"मूर्ख," तीसरे ने कहा, " अगर वे गीले ही नहीं होंगे तो अपने को सुखाएँगे कैसे?"



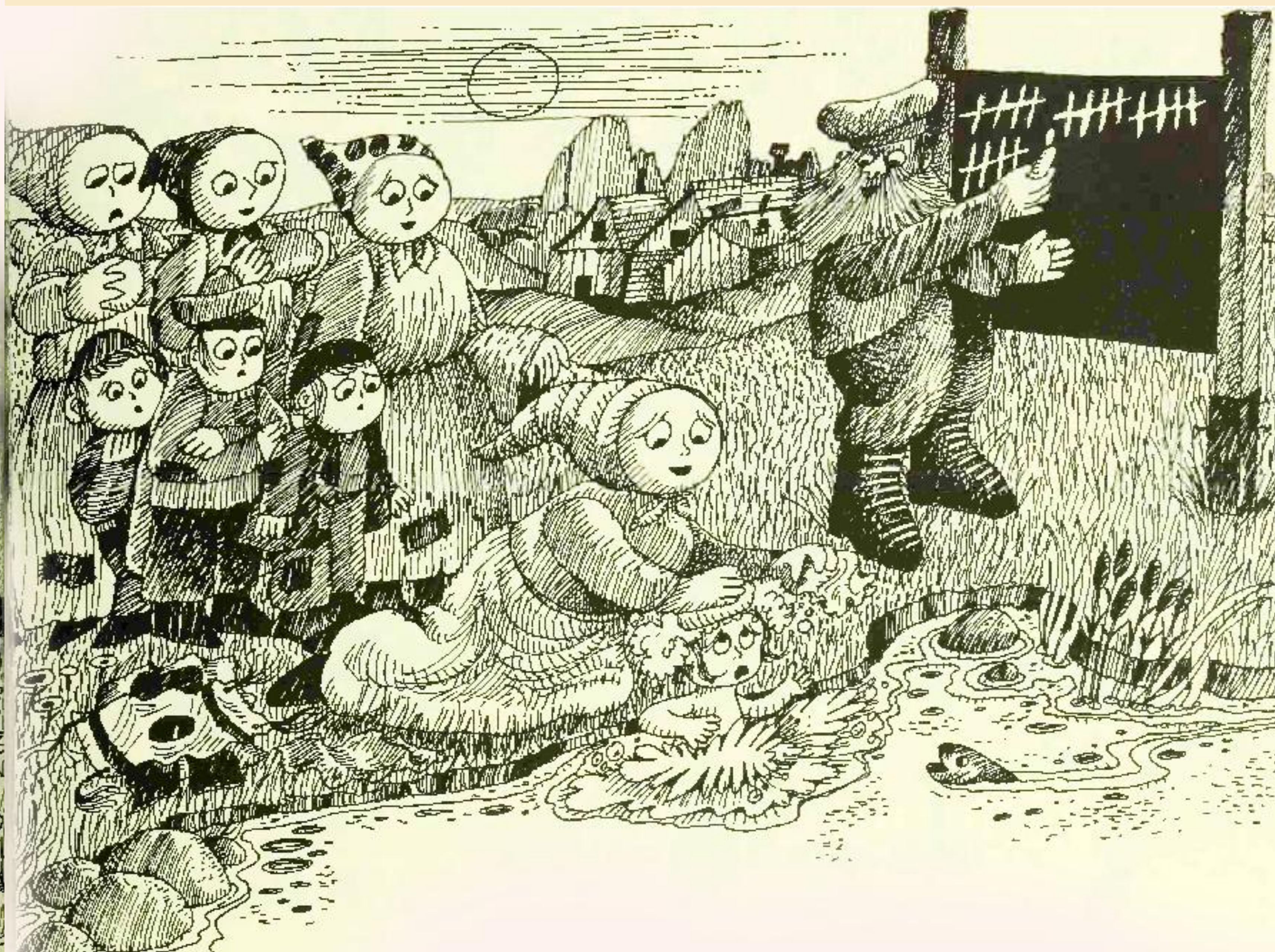
पंच पूरे सात दिन तक इस पर बहस करते रहे। इस पूरे समय, पंच बैरेल, जो उनमें सबसे अधिक बुद्धिमान था, विचार करता रहा। वह अपनी उँगलियों पर कुछ गिन रहा था, और एक कागज़ पर कुछ लिख भी रहा था। अचानक वह उठ खड़ा हुआ।

"मैं समझ गया," वह चिल्लाया। मैंने सब संख्याओं का अध्ययन कर लिया है, और पूरी बात मेरी समझ में आ गई है।"



"एक मूर्ख भी जानता है कि ५० सोने के सिक्के, चाहे तुम एक-एक कर के इकट्ठे करो, या फिर तुम्हें ५० सिक्कों से भरा एक बटुआ मिल जाए, बात एक ही है। ५० आखिर ५० ही होता है। "

"नहाने के साथ भी ऐसा ही है। हमारे बच्चों को हर शुक्रवार को नहाने की ज़रूरत नहीं है। वे पूरे साल भर का नहान एक बार में ही पूरा क्यों नहीं कर लेते।"



और फिर उन्होंने ऐसा ही किया।

बच्चे साल में एक बार नदी में नहाने लगे। वे ५० बार जल्दी-जल्दी नदी में गोते लगाते। नहाना उन्हें फिर भी पसंद तो न था, लेकिन क्योंकि साल में एक ही बार करना था, इसलिए उन्हें अधिक आपत्ति नहीं थी।



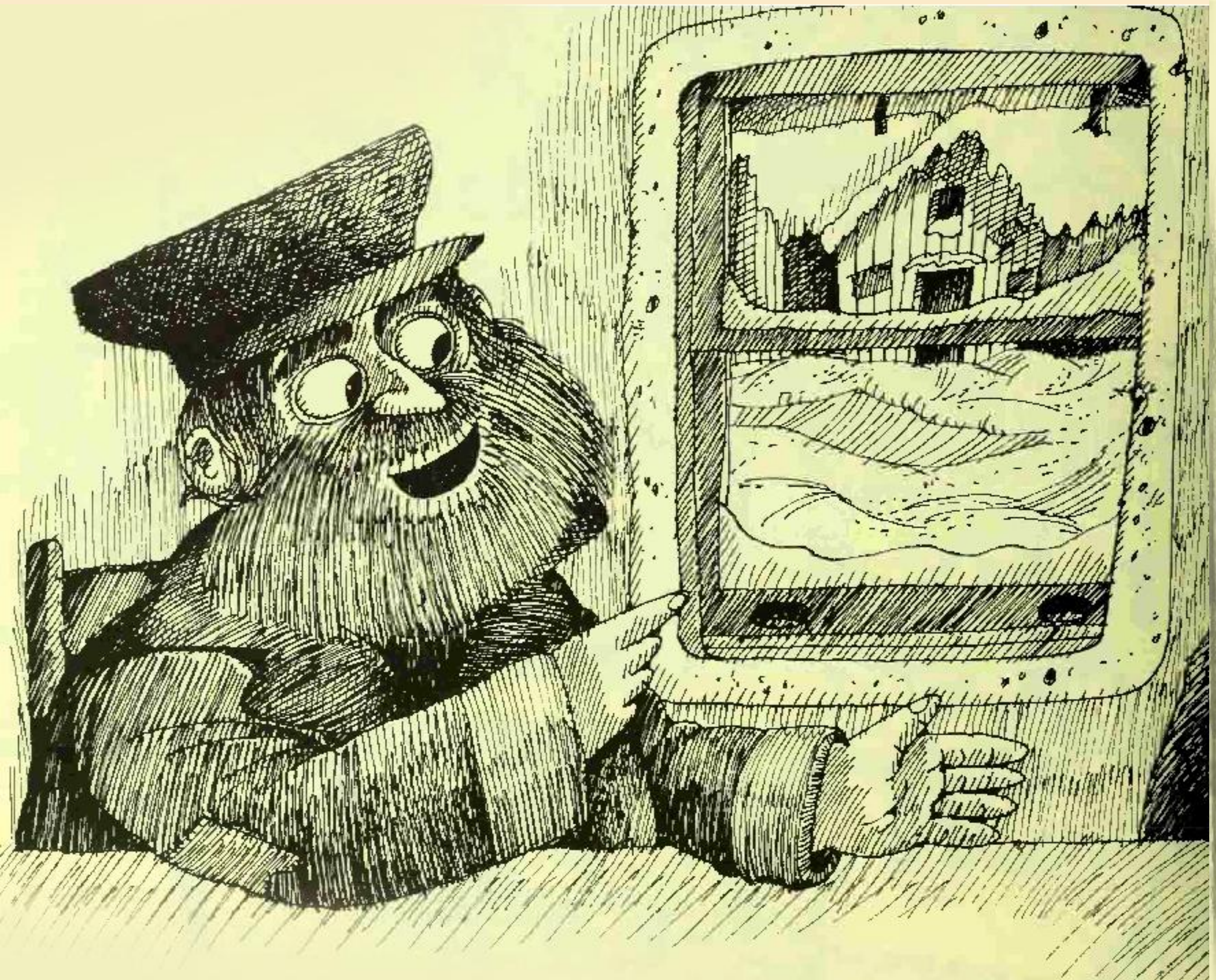
फिर जब बर्फ गिरी

चेल्म का शहर शायद ही कभी खूबसूरत दिखता हो। सड़कें अक्सर कीचड़ से भरी होती थीं। घर बहुत पुराने हो चुके थे, और उन्हें रंग-रोगन की ज़रूरत थी। और जब भी कोई फूल वहां खिलता था, तो कोई भूखी बकरी आकर उसे खा जाती थी।

लेकिन एक दिन अचानक चेल्म बड़ा खूबसूरत हो गया। यह वह दिन था जब बर्फ गिरी।

पहले बर्फ बहुत हलके-हलके गिर रही थी। फिर बर्फ के बड़े-बड़े कतरे ज़मीन पर गिरने लगे। जल्दी ही एक खूबसूरत सफ़ेद कम्बल ने जैसे पूरे शहर को ढक लिया।





सबसे पहले एक पंच ने ध्यान दिया कि बर्फ गिर रही है।

"देखो," वह बोला, "मेरे घर की छत बर्फ से भर गई है। अब मुझे चूती हुई छत की मरम्मत करने की ज़रूरत नहीं है। यह बर्फ ही अब पानी को अंदर नहीं आने देगी।"



"और अब सड़कों की मरम्मत की भी ज़रूरत नहीं," दूसरे पंच ने कहा। "बर्फ गिरने से सड़कों के सारे गड्ढे भर गए हैं, और वे समतल हो गई हैं।"



"लेकिन चेल्म के लोगों को अब घरों के अंदर ही रहना होगा," सबसे बुद्धिमान बैरेल ने कहा। "अगर वे बाहर निकले, तो यह ख़ूबसूरत बर्फ की परत तहस-नहस हो जायेगी।"

"बैरेल ने बिलकुल ठीक कहा।"

"पांव पड़ने से बर्फ की दुर्दशा हो जाएगी।"

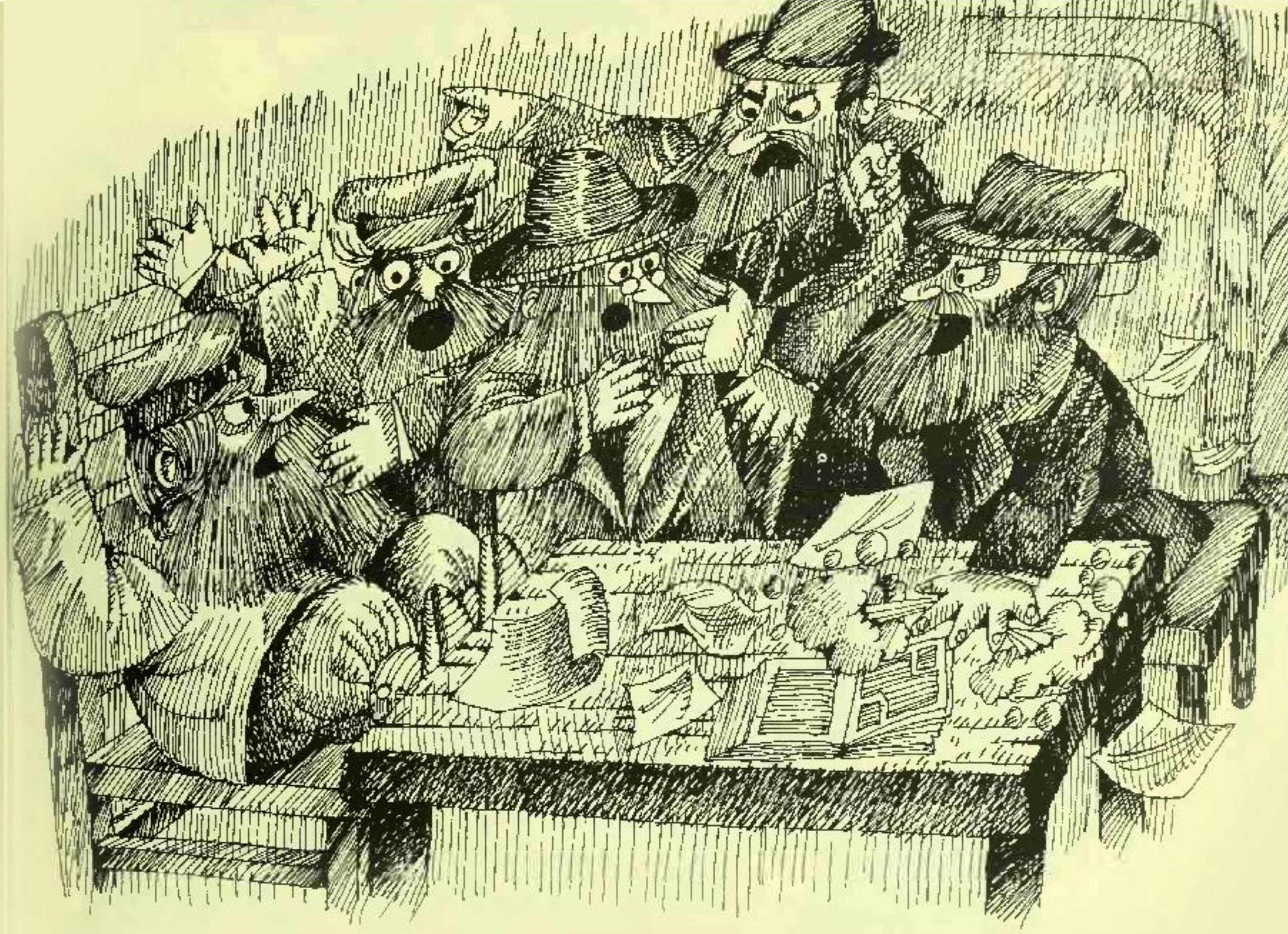
"बैरेल हमेशा सही बोलता है।"



बैरेल मुस्कुराया, और बोला, "सबसे पहले हमें एक हरकारे को चेल्म के सारे घरों में भेजना होगा। वह जाकर लोगों को बताएगा, कि उन्हें अपने घरों में ही रहना है।"



"लेकिन बच्चों का क्या होगा?" किसी ने पूछा।
"वो भला सारी रात स्कूल में कैसे रहेंगे?"



सभी पंच फिर आपस में बहस करने लगे।

"किसी को भी बर्फ पर चलने की इजाज़त नहीं है, बच्चों को भी नहीं।"

"लेकिन रात को बच्चों को घर पर ही होना चाहिए।"

"लेकिन वे बर्फ पर नहीं चल सकते, वरना उनके पैरों के निशान बर्फ पर पड़ जायेंगे।"

"लेकिन वे स्कूल में भी नहीं रह सकते, उनके लिए स्कूल में चारपाइयाँ कहां हैं।"



"बस बहुत हुआ!" बैरेल ने जोर से कहा। "तुम सब बेवकूफ हो," वह बोला। "बच्चों को घर तो पहुंचना ही होगा, और उन्हें बर्फ पर चलना भी नहीं चाहिए।"

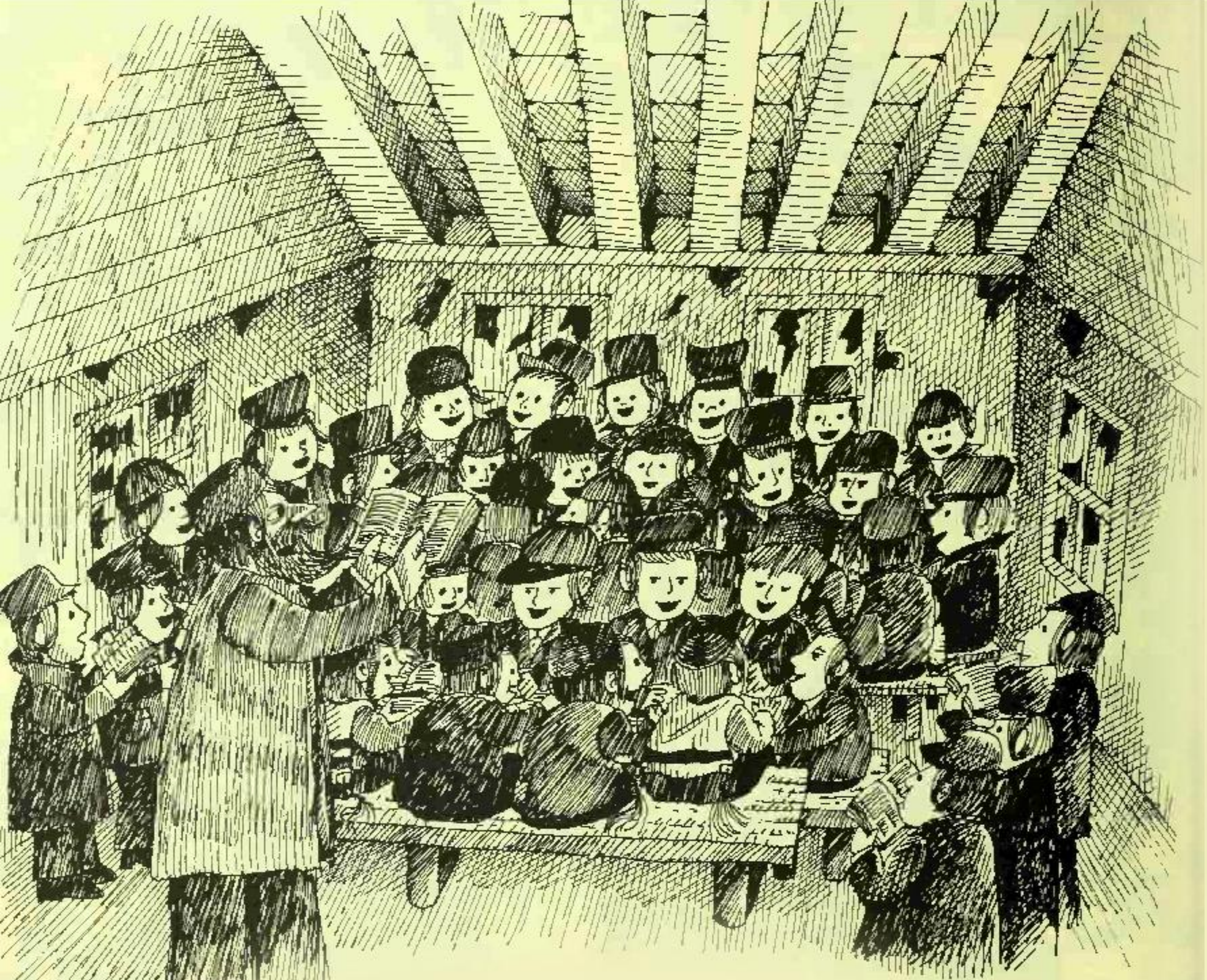
"लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है, कि वे बर्फ में भी न चलें और घर भी पहुँच जाएँ," एक पंच ने पूछा।

बैरेल मुस्कुराया, "जवाब बहुत आसान है। हम सब स्कूल जायेंगे, और बच्चों को अपने कन्धों पर चढ़ा कर उन्हें घर ले जायेंगे।"

और उन्होंने वैसा ही किया।

और फिर जब सभी पंच पंचायत को लौटे, और खिड़की से बाहर देखा, तो उन्हें चारों तरफ बर्फ पर पैरों के निशान दिखाई दिए। जब वे अपने गीले जूते उतार रहे थे, तब भी वे नहीं समझ पाए कि कौन उनके आदेश की अवहेलना करके बर्फ पर चला है।





चेल्म का नया स्कूल

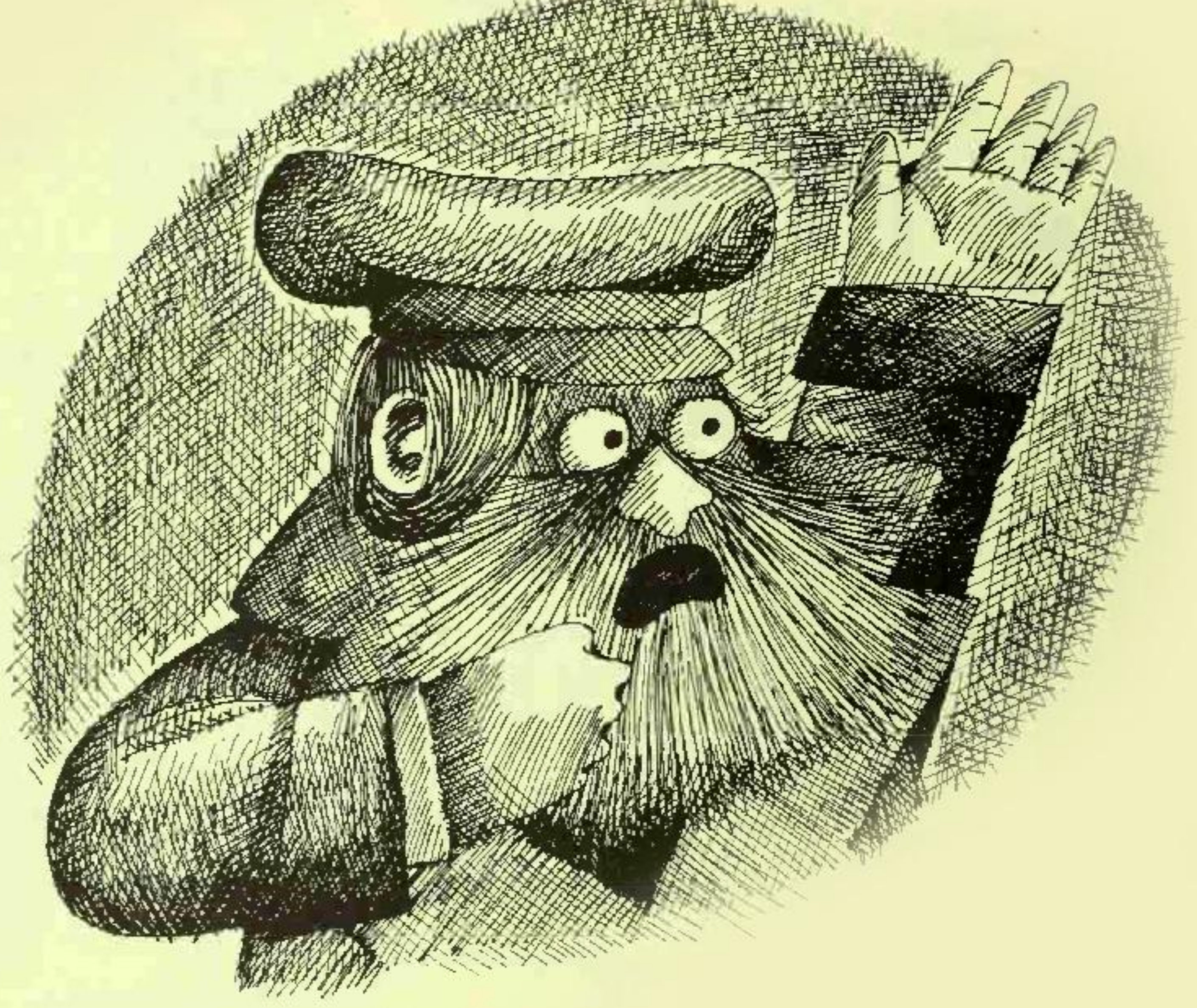
चेल्म का स्कूल बहुत छोटा था, और काफी पुराना हो चुका था। बहुत से बच्चों को खड़े खड़े पढाई करनी पढ़ती थी।



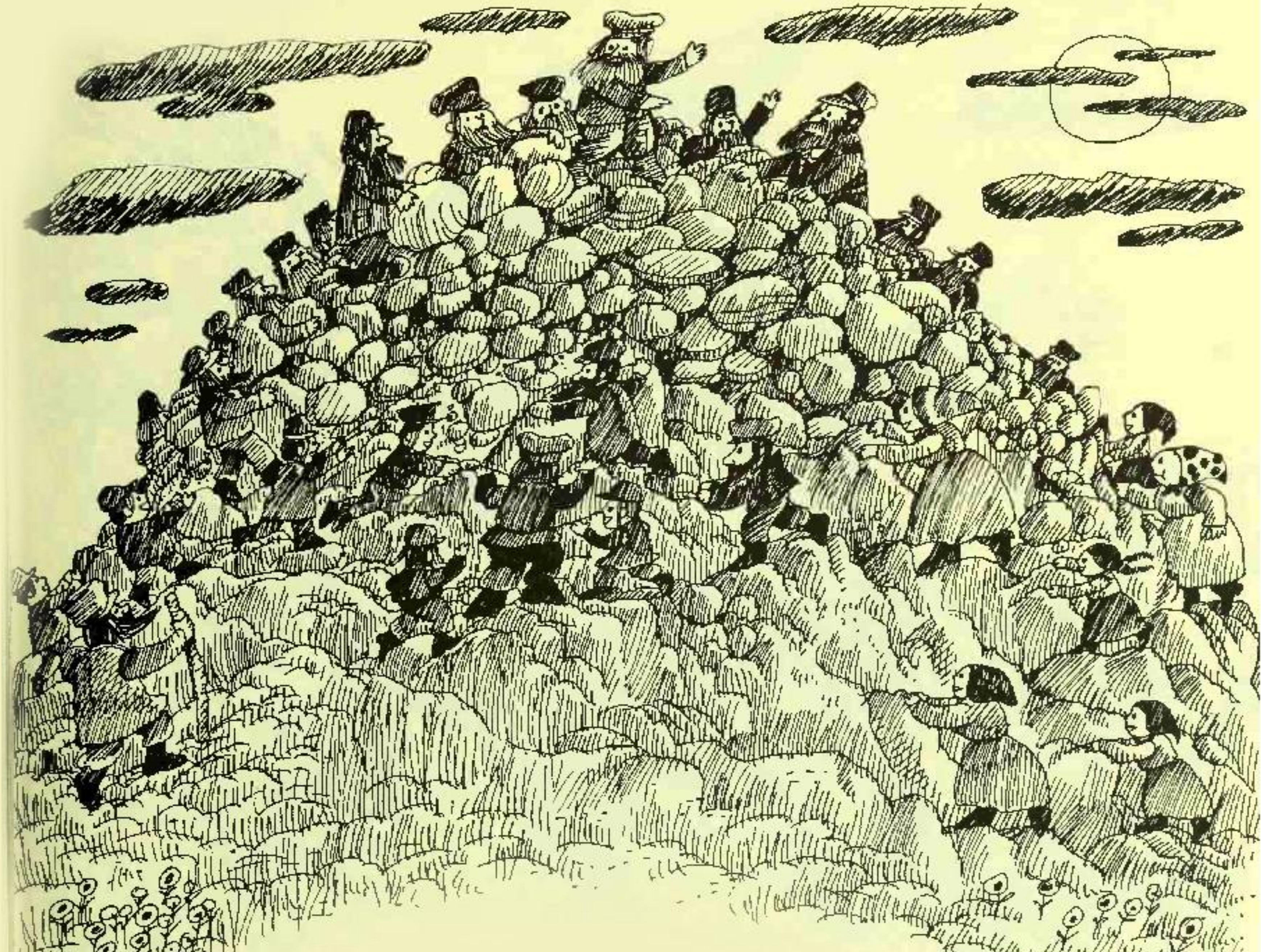
"हमें एक नए स्कूल की आवश्यकता है," किसी ने पंचों की सभा में कहा।

"जब बरसात होती है, तो छत टपकने लगती है। मेरे बच्चे का सर गीला हो जाता है," दूसरे व्यक्ति ने कहा।

"कक्षा इतनी खचाखच भरी होती है," शिक्षक ने पंचों से कहा, "कि हर बच्चे को पता होता है, कि दूसरा क्या सोच रहा है, मैं इनकी परीक्षा भला कैसे लूँ।"



"तो ठीक है,", बैरेल ने घोषणा की, "अगर एक नए विद्यालय की आवश्यकता है, तो हम उसे बनाएंगे। और क्योंकि यह चेल्म है, इससे अच्छा स्कूल आज तक कहीं नहीं बना होगा।"



अगले दिन सुबह सवेरे, हर कोई एक नज़दीकी पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गया। वहां सैकड़ों बड़ी-बड़ी चट्टानें बिखरी पड़ी थीं। लोगों का इरादा था की इन चट्टानों को तराश कर नए स्कूल की चहार-दीवारी बना ली जाए।



हर एक चट्टान इतनी भारी थी, कि उसे चार-चार लोगों ने मिल कर उठाया, और पहाड़ के नीचे लेकर आये।



जब ये चट्टानें नीचे लाई जा रही थीं, तो सभी बच्चे बड़े कौतूहल से यह सब देख रहे थे। फिर, जब सारे पत्थर नीचे लाये जा चुके थे, एक नन्ही लड़की ने बैरेल के कोट की बांह खींची।

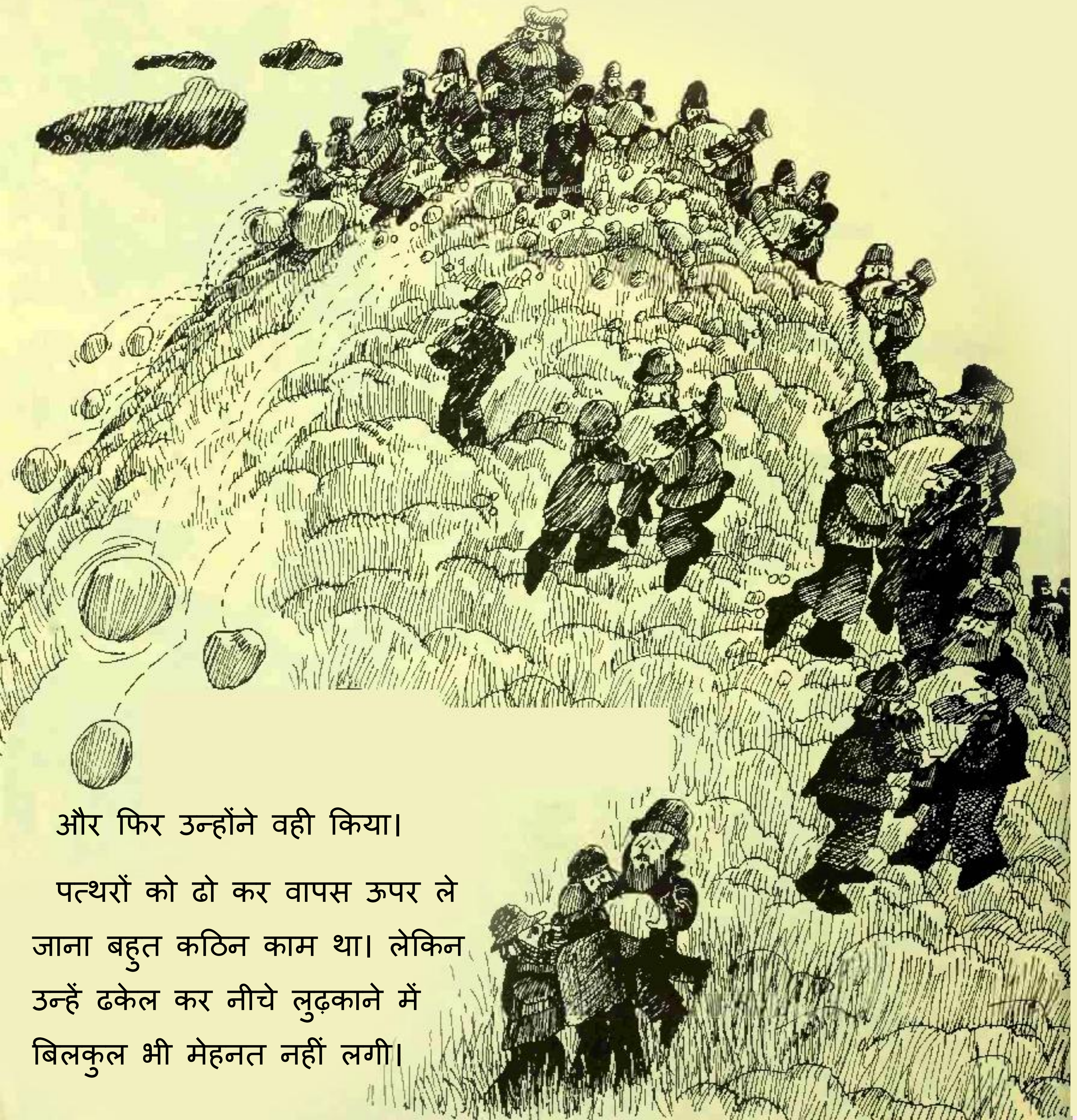
"यह तो कोई अक्लमंदी नहीं हुई," उस लड़की ने कहा।

"क्यों, क्या हुआ?"

"इतने बड़े-बड़े पत्थरों को नीचे तक ढो कर लाने की क्या ज़रुरत थी? नीचे कोई आबादी तो है नहीं। अगर पत्थरों को पहाड़ी से नीचे लुढ़का दिया जाता, तो यह काम बड़ी आसानी से हो जाता।"

"हूँ, तुम ठीक कहती हो," बैरेल ने कहा। बैरेल दौड़ता हुआ पहाड़ से नीचे आया, और सबसे बोला, "ये सारे पत्थर वापस पहाड़ी की चोटी पर ले जाओ। मैं तुम्हारा काम आसान बनाये देता हूँ। इन पत्थरों को ऊपर ले जाकर बस धक्का देकर नीचे लुढ़का दो।"

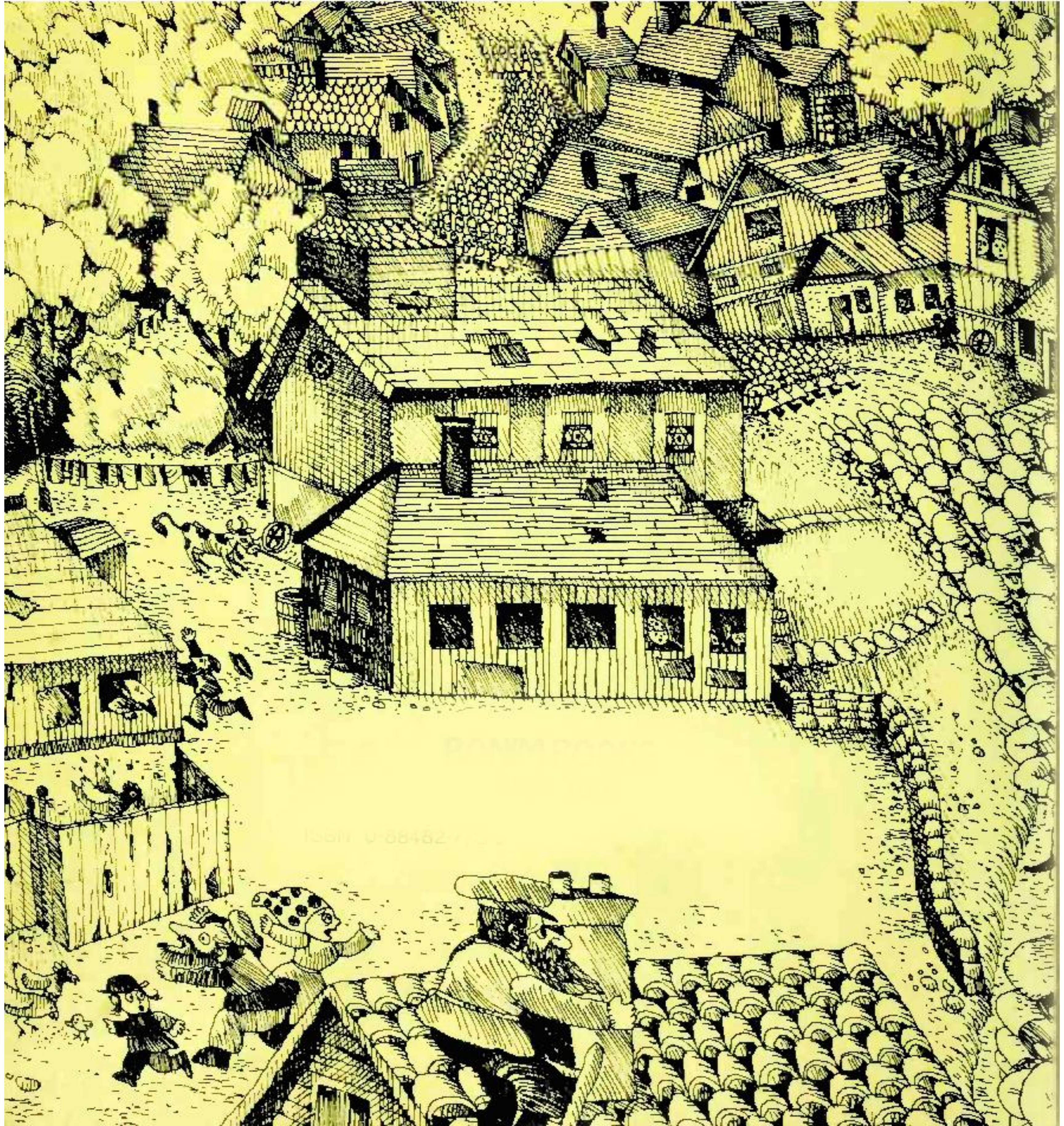




और फिर उन्होंने वही किया।

पत्थरों को ढो कर वापस ऊपर ले जाना बहुत कठिन काम था। लेकिन उन्हें ढकेल कर नीचे लुढ़काने में बिलकुल भी मेहनत नहीं लगी।

समाप्त



ISBN 0-88482